हिन्दी साहित्य के संवर्धन में अवधी की भूमिका

डॉ. शिवम तिवारी
भारतीय नौसेना में पदस्थ
पानी, पर्यावरण, संस्कृति एवं साहित्य के समन्वयक
ईमेल – shivamtiwari1129@gmail.com

साहित्य, संगीत एवं कला देश की सांस्कृतिक धरोहर होती है, जिसके द्वारा लोगों का रहन-सहन के साथ विविध प्रकार के क्रियाकलापों को समझा जा सकता है| साहित्य सरोवर में हिन्दी साहित्य को सर्वाधिक मान्यता प्राप्त है| सभ्यताओं का उत्थान-पतन एवं उसकी समझ साहित्यिक ज्ञान के बिना अधूरा है| अतएव साहित्यिक विमर्श आवश्यक है| हिन्दी साहित्य के संवर्धन में बोलियों की भूमिका अहम् है| अतः आंचलिक बोलियों का विवेचन अपरिहार्य है|

भाषा विभिन्न प्रकार की बोलियों का समन्वय है, जहां एक ओर बोली का स्वरूप स्वतन्त्र, मौखिक एवं लिपि विहीन होता है, वहीं भाषा व्याकरण एवं लिपि के अधीन होती है। बोली का लिखित रूप ही भाषा है। दुनिया के खाके में लगभग 7100 भाषाओं में हिन्दी साहित्य तीसरे स्थान पर पहुंच चुकी है। हिन्दी साहित्य के सम्वर्द्धन में प्रवासी भारतीय साहित्यकारों की भूमिका अहम है। आज अवधी न केवल देश में अपितु दुनिया के हर कोने में बोली जाने वाली भाषा है| सभी को अपनी भाषा पर गर्व होना चाहिए। देश में भाषा, साहित्य एवं बोलियों में समन्वय स्थापित करके ही हिन्दी साहित्य को संवारा जा सकता है।

बोली का प्रभाव सीधे साहित्य पर पड़ता है| किसी देश की सांस्कृतिक एकता वहां के साहित्य पर निर्भर है। भाषा हमें एक दूसरे से जुड़ने का अवसर प्रदान करती है। यदि द्रविड़ के रामानन्द उत्तर न गये होते तो भक्ति परम्परा के महाकाव्य साखी, सबद, रमैनी, सूरसागर एवं श्रीरामचरितमानस का आविर्भाव न होता। बोली आम लोगों से जुड़ी होती है। भाषा का लोक साहित्य में सर्वाधिक महत्व है। बोली, भाषा एवं साहित्य को एक सूत्र में पिरोकर ही सांस्कृतिक एकता स्थापित हो सकती है। अतः किसी भी देश का समन्वित विकास एक देश एवं एक भाषा द्वारा संभव है।

भाषा तो नियमों की मोहताज होती है। सार्थक शब्दों के समूह को भाषा कहते हैं। हिन्दी साहित्य का निरन्तर सम्वर्द्धन वहां की बोलियों की देन है। वस्तुत: बोलियां क्षेत्रीय एवं देशज की उपज हैं, जो वहां के साहित्य सम्वर्द्धन में में सहायक है। मूलतः अवधी एवं ब्रजी सशक्त बोलियां हैं। अवधी की लिपि देवनागरी के बजाय गुरुमुखी है| अवधी का प्राण छंद बरवै है|

अवधी भाषा हिंदी साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है, जिसकी भूमिका विशेषतः उत्तर भारतीय क्षेत्रों में महत्वपूर्ण रही है। अवधी के अनेक महाकाव्य, कथा साहित्य, और गाथा-काव्य उत्कृष्ट साहित्य के रूप में विकसित हुए हैं। श्रीरामचरितमानस, सूरदास कृत 'सूर सागर', और गोस्वामी तुलसीदास की कृतियाँ अवधी में प्रमुख हैं, जो हिंदी साहित्य के आधार स्तम्भ हैं। मालिक मुहम्मद जायसी का पद्मावत ठेठ अवधी का सर्वोत्तम महाकाव्य है| अवधी साहित्य ने समाज में सामाजिक, धार्मिक, और सांस्कृतिक उत्थान का योगदान किया है और आज भी इसका महत्व बना रहता है।

सम्पूर्ण अवधी भाषा का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है, जिसके फलस्वरूप बोलचाल में स्थान-स्थान पर अंतर पाया जाता है| बोली के बदलने के सम्बन्ध में अवधी क्षेत्र में एक कहावत अत्यन्त प्रसिद्ध है – कोस-कोस पर पानी बदलै, चार कोस पर बानी| अवधी अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हुई पूर्वी उपभाषा वर्ग की सर्वाधिक प्रसिद्ध बोली है, जिसका भौगोलिक क्षेत्र उत्तर प्रदेश के 18 जिले क्रमशः अयोध्या, फैजाबाद, लखनऊ, प्रतापगढ़, अमेठी, सुल्तानपुर, रायबरेली, बाराबंकी, प्रयागराज, कौशाम्बी उन्नाव, बहराइच, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, गोंडा, बहराइच, श्रावस्ती, एवं अम्बेडकर नगर आदि ज़िलों तक फैला हुआ है। इसके साथ ही मुजफ्फरपुर (बिहार) में भी इसके मिले-जुले रूप को देखा जा सकता है| कुछेक साहित्यकार बघेली, बुन्देली एवं छत्तीसगढ़ी को भगिनी सदृश मानते हैं।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में पालि-प्राकृत काल में अयोध्या क्षेत्र कोसल नाम से विख्यात था। यहीं की बोली कोसली मध्यकाल में अवधी के विकास का आधार बनी। वैविध्य इसकी निजी विशेषता है| इसमें स्वरों की मात्रा कम है| इसमें ध्वनित 'ई' तथा 'उ' अघोष रूप में मिलते हैं| ण के स्थान पर न हो जाता है| कहीं-कहीं पर र हो जाता है| अवधी के तिर्यक रूपों में पर्याप्त भिन्नता आ जाती है| अव्यय रूप स्थान भेद के कारण बदलते हैं| इन सबका प्रभाव अवधी के रूपग्राम पर पडा|

यद्यपि अवधी का आरंभिक रूप रोडा कृत राउलबेल तथा दामोदर पंडित कृत 'उक्ति-व्यक्ति प्रकरण' में मिलता है| तथापि इसका वास्तविक विकास सूफी काव्यधारा तथा रामकाव्यधारा के माध्यम से हुआ। सूफी काव्यधारा में जायसी तथा राम काव्यधारा में तुलसी केंद्रीय कवि हैं, जिन्होंने क्रमश: ठेठ अवधी की मिठास और तत्समी अवधी का औदात्य जनसाधारण के समक्ष प्रस्तुत किया।

अवधी की भाषायी विशेषताओं में निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण हैं-

1. ध्वनिगत विशेषताओं में ण - न (कौण - कौन, बाण - बान), ड़ > र (साड़ी - सारी), व - ब (वचन - बचन), श, ष - स (वर्षा- बरसा) इत्यादि प्रमुख हैं। उकारान्तता (राम कहतु चलु) इसकी साधारण प्रवृत्ति है तथा ऐ और औ इसमें सन्ध्यक्षरों के रूप में प्रयुक्त होते हैं जैसे- पैसा - पइसा, और - अउर।
2. व्याकरणिक विशेषताओं में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है कि इसमें संज्ञा के तीन रूप जैसे- लरिका, लरिकवा, लरिकउना मिलते हैं। 'ए', 'न' प्रत्ययों से बहुवचन बनाए जाते हैं, जैसे- रात - रातें, लरिका - लरिकन। ई, इनी, नी तथा इया प्रत्ययों से पुल्लिंग शब्द स्त्रीलिंग बनते हैं, जैसे मोरनी, बुढ़िया आदि। क्रियाओं में वर्तमान के लिये त-रूप (बैठत, देखत), भूतकाल के लिये वा-रूप (आवा, जावा) तथा भविष्य काल के लिये ब-रूप (खाइब) प्रचलित हैं।
3. अवधी की शब्दावली प्रमुखत: संस्कृत के तद्भवीकरण तथा देशज प्रक्रिया से विकसित हुई है।

अवधी की प्रमुख विशेषता उसके लचीलेपन तथा संतुलन में है। यह ब्रज की तरह न तो अति कोमल है, न हरियाणी की तरह कठोर। लोकमंगल के तत्व इसकी आंतरिक संरचना में ही निहित हैं। यही कारण है कि भक्तिकाल के अधिकांश प्रबंध काव्य इसी भाषा में रचे गए हैं। निम्नलिखित पंक्तियों में लोकमंगल का यही भाव दिखता है-

''परहित सरिस धरम नहिं भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई।''

हिंदी साहित्य और अवधी का इतिहास गहरा और समृद्ध है। हिंदी साहित्य ने विभिन्न युगों में विकास किया है, जबकि अवधी भाषा उत्तर भारत में एक प्रमुख भाषा रही है और कई महान कवियों द्वारा उन्नति की। कई

लेखों में, हिंदी साहित्य के विभिन्न युगों का विस्तृत वर्णन और अवधी के प्रमुख लेखकों और उनकी काव्य-परंपरा का वर्णन किया जा सकता है।

अवधी साहित्य का इतिहास बहुत लम्बा और प्राचीन है। इसमें कई महान कवियों और लेखकों की योगदान है। इसकी शुरुआत भाषाई उत्थान के साथ हुई और इसने भारतीय साहित्य को अपनी विशेषता से नवाजा। गोस्वामी तुलसीदास, मलिक मोहम्मद जायसी, प्रताप नारायण मिश्र, बलिभद्र प्रसाद दीक्षित पढीस, वंशीधर शुक्ल, चंद्रभूषण द्विवेदी, रमई काका, आद्याप्रसाद, गुरु प्रसाद सिंह मृगेश, शारदा प्रसाद सिंह भुसुंडी, जुमई खां आजाद, निर्झर प्रतापगढ़ी एवं डॉ. राम बहादुर मिश्र आदि प्रमुख हैं|

अवधी साहित्य एक महत्वपूर्ण भारतीय भाषा है, जिसका इतिहास व्यापक और गौरवपूर्ण है। यह साहित्य कई शताब्दियों से विकसित हो रहा है और उसमें कई महान कवि, लेखक और समाजसेवक शामिल हैं। अवधी साहित्य का अनुसंधान करने पर हमें महान कवियों जैसे गोस्वामी तुलसीदास, केशव दास, भवानी प्रसाद मिश्र, और आचार्य श्रीरामचंद्र जी के योगदान का पता चलता है। इस साहित्य का विकास रामायण, महाभारत, पुराणों, उपनिषदों, और वेदों के प्रेरणास्पद उपन्यास, कविता, और धार्मिक ग्रंथों के माध्यम से हुआ है।

अवधी साहित्य का विकास एक रोमांचक यात्रा है। इसकी शुरुआत में भजन, कविता और कहानी जैसी लोकप्रिय शैलियों का उदय हुआ। फिर, भक्ति काव्य और रामायण-महाभारत की कथाएं इसका महत्वपूर्ण हिस्सा बन गईं। इसके बाद नाटक, कहानी, उपन्यास, और सामाजिक विचार के क्षेत्र में भी विकास हुआ। अवधी साहित्य का यह यात्रा समृद्धि और सांस्कृतिक निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है।

भाषा के रूप में अवधी का पहला स्पष्ट उल्लेख अमीर खुसरो की रचना खालिकबारी में मिलता है। रोडा कृत राउलबेल व दामोदर पंडित कृत उक्ति-व्यक्ति प्रकरण में अवधी के प्रयोग से स्पष्ट होता है कि अवधी एक भाषा के रूप में 13वीं सदी में स्थापित हो चुकी थी। मूल प्रश्न है कि अवधी के मध्यकाल में एक काव्य-भाषा के रूप में स्थापित होने के पीछे कौन से उत्तरदायी कारक थे और इसका स्वरूप कैसा था? अवधी की स्थापना के संबंध में पहला सुयोग यह हुआ कि सूफी कवियों ने अपने प्रेमाख्यानों की रचना में इसका प्रयोग किया। मुल्ला दाऊद की चन्दायन ने एक ही झटके में अवधी को लोकभाषा के स्तर से उठाकर काव्यभाषा के रूप में स्थापित कर दिया। इसी परंपरा में कुतुबन की मृगावती और जायसी की पद्मावत है।

सूफी कवियों की अवधी में लोकभाषा की मिठास है। लोकजीवन के शब्दों का सुन्दर प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त बिम्ब योजना व अप्रस्तुत योजना ने इस भाषा को चरम स्तर तक पहुँचा दिया। मध्यकाल में अवधी के विकास हेतु एक और सुयोग हुआ। भक्तिकाल की रामभक्ति काव्य धारा वस्तुतः अवधी में ही पुष्पित-पल्लवित हुई। तुलसी की कृतियों ने अवधी ने नए आयामों को छुआ। यद्यपि तुलसी की अवधी सूफी कवियों की अवधी से अलग है। यहाँ तत्सम शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया गया है। तुलसी के हाथों में पड़कर यह भाषा नाद सौंदर्य व आलंकारिता से युक्त हुई। शुक्ल ने तुलसी को अनुप्रास का बादशाह इसी संदर्भ में कहा।

तुलसी के बाद विशाल रामकाव्य परंपरा काव्यभाषा के स्तर पर धीरे-धीरे अवधी से दूर होकर ब्रजभाषा के साथ जुड़ने लगी। गोस्वामी जी के काव्य में भी अवधी के साथ ब्रजी का समन्वय देखने को मिलता है। अवधी आदिकाल से ही हिन्दी की प्रमुख उप भाषा के रूप में उभरी। अवधी की पहली कृति मुल्ला दाउद की 'चंद्रायन' या 'लोरकहा' (1370 ई.) मानी जाती है। तदनुपरान्त अवधी साहित्य का उत्तरोत्तर विकास होता गया। अवधी को साहित्यिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय सूफी प्रेम मार्गी कवियों को है। कुतबन (मृगावती), मलिक

मोहम्मद जायसी (पद्मावत), मंझन (मधुमालती), आलम (माधवानल कामकंदला), उसमान (चित्रावली), नूर मुहम्मद (इन्द्रावती), कासिमशाह (हंस जवाहिर), शेख निसार (यूसुफ जुलेखा), अलीशाह (प्रेम चिंगारी) आदि सूफी कवियों ने अवधी को साहित्यिक गरिमा प्रदान की।

भक्ति काल में बैसवाड़ी अवधी में गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित श्रीरामचरित मानस ने हिन्दी साहित्य को नई ऊंचाईयां प्रदान की। यहां तक की आज श्रीरामचरितमानस अधिकांशत: हिन्दुओं के घर घर में देखी जा सकती है। वर्तमान में श्रीरामचरितमानस हिन्दी साहित्य दुनिया का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। सत्य तो यह है कि मनोवैज्ञानिक एवं साहित्यिक दोनों दृष्टियों से अवधी का विशेष महत्व है| इस तरह साहित्यिक भाषा के रूप में अवधी के विकास का लम्बा इतिहास रहा है|

भक्तिकाल में भक्त कवियों, विशेष रूप में गोस्वामी तुलसीदास ने अवधी के रूप में निखार लाकर उसको उत्कर्ष प्रदान किया| रहीम की रचनाएं भी अवधी का श्रेष्ठ नमूना है| भक्तिकाल से बाद अवधी का प्रयोग काव्य भाषा के रूप में होता रहा| यह जरूर था कि इसका प्रयोग कम हो गया था| आधुनिक काल में अवधी का प्रयोग साहित्य लेखन के लिए हो रहा है| लोक साहित्य और भाषा विज्ञान के अध्ययन की दृष्टि से अवधी का महत्व आज भी बना हुआ है| यह सर्व विदित है कि हिन्दी साहित्य के संवर्धन में अवधी की महती भूमिका रही है।